"सेवा?"

• देखा देखी सभ करे मनमुखि बूझ न पाई । जिन गुरमुखि हिरदा सुध है सेव पई तिन थाई । (3-28)

अर्थः- अपने मन के पीछे चलने वाला मनुष्य सब कुछ दिखावे की खातिर करता है उसे सही जीवन जीने की समझ नहीं आती । पर गुरू के सन्मुख हो के जिन मनुष्यों का हृदय पवित्र हो जाता है उन की घाल - कमाई प्रभू दर पे कबूल हो जाती है ।

• मन हरि कीआ तन सभ साजिआ । पंच तत रचि जोति निवाजिआ । सहजा धरति बरतन कउ पानी । निमख न विसारहु सेवहु सारिगपानी ।1।

अर्थः- हे भाई ! जिस परमात्मा ने तेरा मन बनाया तेरा शरीर बनाया । मिट्टी हवा आदि पाँच तत्वों का पुतला बना के उसको अपनी जोति से सुंदर बना दिया । जिसने तुझे लेटने के लिए धरती दी जिसने तुझे उपयोग के लिए पानी दिया । उस परमात्मा को कभी ना भुलाओ उसको हर समय सिमरते रहो ।

• मन सतिगुर सेवि होई परम गते । हरख सोग ते रहहि निरारा तां तू पावहि प्रानपते ।1।

अर्थः- हे मेरे मन ! गुरू की शरण पड़ा रह इस तरह सबसे ऊँची आत्मिक अवस्था प्राप्त हो जाती है । अगर तू गुरू के दर पर रह के खुशी - ग़मी से निर्लिप टिका रहे तो तू प्राणों के मालिक प्रभू को मिल सकता है ।

कापड़ भोग रस अनिक भुचाएं । मात पिता कुटंब सगल बनाए । रिजक समाहे जलि थलि मीत । सो हरि सेवहु नीता नीत ।2।

अर्थः- हे भाई ! जिस परमात्मा ने तुझे अनेकों किस्मों के कपड़े बरतने को दिए । जिसने तुझे अनेकों अच्छे - अच्छे पदार्थ खाने - पीने को दिए । जिसने तेरे वास्ते माता - पिता, परिवार आदि सारे संबंधी बना दिए । हे मित्र ! जो परमात्मा पानी में धरती में हर जगह जीवों को रिज़क पहुँचाता है । उस परमात्मा को सदा ही सदा ही याद करते रहो ।

तहा सखाई जह कोई न होवै । कोटि अप्राध इक खिन महि धोवै । दाति करै नही पछोतावे । एका बखस फिर बहुर न बुलावै ।3।

अर्थः- हे भाई ! जहाँ कोई भी मदद नहीं कर सकता परमात्मा वहाँ भी साथी बनता है । जीवों के करोड़ों पाप एक छिन में धो देता है । हे

भाई ! वह प्रभू सब जीवों को दातें देता रहता है । कभी इस बात से पछताता नहीं । जिस प्राणी पर एक बार बख्शिश कर देता है उसको उसके लेखा माँगने के लिए फिर नहीं बुलाता ।

किरत संजोगी पाइआ भालि । साधसंगति महि बसे गुपाल ।

(5-1337-1338)

अर्थः- हे भाई ! सृष्टि का रक्षक प्रभू साध - संगति में बसता है । पिछले किए कर्मों के संजोगों से उसको साध - संगति में ढूँढ के तलाश लिया जाता है ।

• जितने जीअ जंत प्रभि कीने तितने सिरि कार लिखावै । हरि जन कउ हरि दीन्ह वडाई हरि जन हरि कारै लावै ।1।

अर्थः- हे भाई! जितने भी जीव-जंतु प्रभु ने पैदा किए हैं, सारे ही ऐसे हैं कि हरेक के सिर पर करने के लिए कार लिख रखी है । अपने भक्त को प्रभु ने यह वडिआई बख्शी होती है कि प्रभु अपने भक्त को नाम जपने की कार में लगाए रखता है ।

सतिगुर हरि हरि नाम द्रिड़ावै । हरि बोलहु गुर के सिख मेरे भाई हरि भउजल जगत तरावै ।1। रहाउ ।

अर्थः- हे भाई ! गुरु मनुष्य के हृदय में परमात्मा का नाम पक्की तरह टिका देता है । इसलिए हे गुरु के सिखो ! हे मेरे भाईयो ! गुरु की शरण पड़ कर परमात्मा का नाम जपा करो । परमात्मा संसार - समुंदर से पार लंघा लेता है ।

जो गुर कउ जन पूजे सेवे सो जन मेरे हरि प्रभ भावै । हरि की सेवा सतिगुर पूजहु करि किरपा आपि तरावै ।2।

अर्थः- हे भाई ! जो मनुष्य गुरु का आदर - सत्कार करता है गुरु की शरण पड़ता है, वह मनुष्य परमात्मा को प्यारा लगता है । हे भाई !

परमात्मा की सेवा - भक्ति किया करो, गुरु की शरण पड़े रहो जो मनुष्य यह उद्यम करता है उसको प्रभु मेहर करके आप पार लंघा लेता है ।

भरमि भूले अगिआनी अंधले भ्रमि भ्रमि फूल तोरावै ।
निरजीउ पूजहि मड़ा सरेवहि सभ बिरथी घाल गवावै ।3।

अर्थः- हे भाई ! गुरु - परमेश्वर को भुला के मनुष्य भटक - भटक के मूर्ति आदि की पूजा के लिए फूल तोड़ता फिरता है । ऐसे मनुष्य भटकने के कारण गलत राह पर पड़े रहते हैं, आत्मिक जीवन की ओर से बेसमझ बने रहते हैं, उन्हें सही जीवन - मार्ग नहीं दिखाई देता । वह अंधे मनुष्य बेजान मूर्तियों को पूजते हैं, समाधियों को माथे टेकते रहते हैं । ऐसा मनुष्य अपनी सारी मेहनत व्यर्थ गवाता है ।

ब्रहम बिंदे सो सतिगुर कहीऐ हरि हरि कथा सुणावै । तिस गुर कउ छादन भोजन पाट पटंबर बहु बिध सति करि मुखि संचहु तिस पुंन की फिरि तोटि न आवै । ४।

अर्थः- हे भाई ! गुरु परमात्मा के साथ गहरी सांझ डाले रखता है, जगत उसको गुरु कहता है, गुरु जगत को परमात्मा की महिमा का उपदेश सुनाता है । हे भाई ! ऐसे गुरु के आगे कई किस्मों के कपड़े, खाने, रेशमी कपड़े श्रद्धा से भेट किया करो । इस भले काम की तोट नहीं आती ।

सतिगुर देउ परतख हरि मूरति जो अमृत बचन सुणावै ।
नानक भाग भले तिस जन के जो हरि चरणी चित लावै ।5।4।
(4-1263-1264)

अर्थः- हे नानक ! कह हे भाई ! जो गुरु आत्मिक जीवन देने वाले महिमा के वचन सुनाता रहता है, वह तो साफ तौर पर परमात्मा का रूप ही दिखता है । उस मनुष्य के अच्छे भाग्य होते हैं जो गुरु की शरण पड़ कर परमात्मा के चरणों में चित्त जोड़े रखता है ।

• एहु सरीर है त्रैगुण धात । इस नो विआपै सोग संताप । सो सेवहु जिस माई न बाप । विचहु चूकै तिसना अर आप ।

(1-1343)

अर्थः- यह शरीर है ही त्रै - गुणी माया का स्वरूप भाव, इन्द्रियाँ सहज ही माया के मोह में फंस जाती है, जिसका नतीजा यह निकलता है कि शरीर को चिन्ता, फिक्र और दुख, कष्ट सताए रखता है । हे भाई ! उस परमात्मा का स्मरण करो, जिसका ना कोई पिता है ना कोई माता है, नाम - जपने की इनायत से अंदर से माया की तृष्णा अहम् व अहंकार मिट जाता है ।

(पाठी माँ साहिबा)

हक हक हक

(शब्द गुरु प्रत्यक्षता)

ऐक शब्द

उपरोक्त अर्थों में कहे गये गुरू-सतगुरू-शबद-नाम-सच्चा नाम इत्यादि विशेष - विशेषो का केवल और केवल ऐक ही अर्थ विशेष है कि - "रागमई प्रकाशित सुगधित आवाज़ विशेष" । इसके आलावा सारे अर्थ केवल मनमत हैं - गुरूमत का इससे कोई संबंध विशेष नंही हैं ।

"सबद गुरू - सुरत धुन चेला । गुण गोबिंद - नाम धुन बाणी ।"